प्राचीन और मध्ययुगीन महिलाओं का समाज के लिए योगदान

श्री. राकेश अशोक रामराजे

सहाय्यक प्राध्यापक,

पी. व्ही. डी. टी. कॉलेज ऑफ एज्युकेशन फॉर वूमेन,

एस. एन. डी. टी. महिला विश्वविद्यालय, चर्चगेंट, मुंबई – 20.

सारांश :

प्रारंभिक वैदिक काल में महिलाओं को बराबरी का दर्जा और अधिकार मिलता था। हालांकी प्राचीन काल समाप्ती और अन्य बाहरी शासनकर्ता इनके धर्म के अनुसार महिलाओं पर पाबंदी देखने को मिलती है। किंन्तु अपवादात्मक स्थिती में कुछ महिलाओंने विरोध जताते हुए सामाज्य, राज्यों में समानता लाने की कोशिश की। मध्ययुग में महिलाओं ने कई अलग – अलग सामाजिक भूमिकाओं पर कब्जा कर लिया। मध्ययुग के दौरान 5 वी शताब्दी से 15वीं शताब्दी तक यूरोपीय इतिहास की अवधि समाप्त हो गई, महिलाओं ने पत्नी, मॉ, किसान, कारीगर और नन के पदों के साथ – साथ कुछ महत्वपर्ण नेतृत्व भूमिकाएं निभाई। मध्ययुग में भारत में महिलाओं को कमोबेश दासता और बंदिशों का ही सामना करना पडा है। में महिलाओं की स्थिती ने पिछली कुछ सदियों में कई बडे बदलावों का सामना किया है। प्राचीन काल में पुरुषों के साथ बराबरी की स्थिती से लेकर मध्ययुगीन काल के जीवन और साथ ही कई सुधारकों द्वारा समान अधिकारों को बढावा दिए जाने तक, भारत में महिलओं का इतिहास काफी गतिशील रहा है। आधुनिक भारत में महिलाएं राष्ट्रपती, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष प्रतिपक्ष की नेता आदि जैसे शीर्ष पदों पर आसीन हुई है।

मुख्य परिभाषा : प्राचीन और मध्ययुगीन महिला, समाज और योगदान

प्राचीन काल :

विद्वानों का मानना है कि प्राचीन भारत में महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ बराबरी का दर्जा हासिल था। हालांकि कुछ अन्य विद्वानों का नजरिया असके विपरीत है। पतंजलि और कात्यायन जैसे प्राचीन भारतीय व्याकरणविदों का हना है कि प्रारंम्भिक वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा दी जाती थी। ऋग्वेदिक ऋचाएं यह बताती हैं कि महिलाओं की शादी एक परिपक्व उम्र होती थी और संभवतः उन्हे अपना पति चुनने की भी आजादी थी। ऋग्वेद और उपनिषद जैसे ग्रंथ कई महिला साध्वियों और संतो के बारे में बताते हैं जिनमे गार्गी और मैत्रेयी के नाम उल्लेखनीय हैं। प्राचीन भारत के कुछ साम्राज्यों में नगरवधु जैसी परंपराएं मौजूद थीं। महिलाओं के नगरवधुके पतिष्ठित सम्मान के लिये प्रतियोगिता होती थी। आम्रपाली नगरवधु का सबसे प्रसिध्द उदाहरण रही है।

अध्ययनों के अनुसार प्रारंभिक वैदिक काल में महिलाओं को बराबरी का दर्जा और अधिकार मिलना था। हालांकि बाद में (लगभब 500 ईसा पूर्व में) स्मृतियों (मनुस्मृति) के साथ महिलाओं की स्थिती में गिरावट आनी शुरु हो गयी और बाबर एवं मुगल साम्राज्य के इस्लामी आक्रमण के साथ और इसके बाद ईसाइयत ने महिलाओं की आजादी और अधिकारों को सीमित कर दिया।

मध्ययुगीन काल : समाज में भारतीय महिलाओं की स्थिती में मध्ययुगीन काल के दौरान और अधिक गिरावट आयी जब भारत के कुछ समुदायों में समी प्रथा, बादी विवाह और विधवा पुनर्विवाह पर रोक, सामाजिक जिंदगी का एक हिस्सा बन गयी थी। भारतीय उपमहाद्वीप में मुगलों की जीत ने परदा प्रथा को भारतीय समाज में ला दिया। राजस्थान के राजपूतों में जौहर की प्रथा थी। भारत के कुछ हिस्सों में देवदासियां या मंदिर की महिलाओं को यौन शोषन का शिकार होना पडा था। बहुविवाह की प्रथा हिंन्दू क्षत्रिय शासकों में व्यापक रुप से प्रचलित थी। कई मुस्लिम परिवारों में महिलाओं को जनाना क्षेत्रों तक ही सीमित रखा गया था।

प्राचीन और मध्ययुगीन महिलाओं का समाज के लिए योगदान : इन परिस्थितियों के बाबजूद भी कुछ महिलाओं ने राजनीति, साहित्य, शिक्षा और धर्म के क्षेत्रों में सफलता हासिल की। रजिया सुल्तान दिल्ली पर शासन करने वाली एकमात्र महिला सम्राज्ञी बनीं । गोंड की महारानी दुर्गावती ने 1564 में मुगल सम्राट अकबर के सेनापति आसफ खान से लडकर अपनी जान गंवाने से पहले पंद्रह वर्षों तक शासन किया था। चांद बीबी ने 1590 के दशक में अकबर की शक्तिशाली मुलग सेना के खिलाफ अहमदनगर की रक्षा की। जहांगीर की पत्नी नूरजहॉ ने राजशाही शक्ति का प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल किया और मुगल राजगद्दी के पीछे वास्तविक शक्ति के रुप में पहचान हासिल की। मुगल राजकुमारी जहॉआरा और जेबुन्निसा सुप्रसिध्द कवियित्रियॉ थी और उन्होने सत्तारुढ प्रशासन को भी प्रभावित किया। शिवाजी की मॉ जीजाबाई को एक योध्दा और एक प्रशासक के रुप में उनकी क्षमता के कारण क्वीन रीजेंट के रुप में पदस्थापित किया गया था। दक्षिण भारत में कई महिलाओं ने गॉवों, शहरों और जिलों पर शासन किया और सामाजिक एवं धार्मिक संस्थानों की शुरुआत की।

भक्ति आंदोलन ने महिलाओं की बेहतर स्थिति को वापस हासिल करने की कोशिश की और प्रभुत्व के स्वरुपों पर सवाल उठाया। एक महिला संत – कवयित्री मीराबाई भक्ति आंदोलन के सबसे महत्वपूर्ण चेहरों में से एक थी। इस अवधि की कुछ अन्य संत – कवयित्रों में अक्का महादेवी, रामी जनाबाई और लाल देद शामिल है। हिंदुत्व के अंदर महानुभाव, वारकरी और कई अन्य जैसे भक्ति संप्रदाय, हिंदू समुदाय में पुरुषों और महिलाओं के बीच सामाजिक न्याय और समानता की खुले तौर पर वकालत करने वाले प्रमुख आंदोलन थे।

ऐतिहासिक प्रथाएं : कुछ समुदायों में सती, जौहर और देवदासी जैसी परंपराओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया था और आधुनिक भारत में ये काफी हद तक समाप्त हो चुकी है। हालांकि इन प्रथाओं के कुछ मामले भारत के ग्रामीण इलाकों में आज भी देखे जाते है। कुछ समुदायों में भारतीय महिलाओं दौंरा परदा प्रथा को आज भी जीवित रखा गया

है और विशेषकर भारत के वर्तमान कानून के तरत एक गैरकानूनी कृत्य होने के बाबजूद बाल विवाह की प्रथा आज भी प्रचलित है।

सती : सती प्रथा एक प्राचीन और काफी हद तक विलुप्त रिवाज है, कुछ समुदायों में विधवा को अपने पति की चिता में अपनी जीवित आहुति देनी पडती थी। हालांकि यह कृत्य विधवा की ओर से स्वैच्छिक रुप से किये जाने की उम्मीद की जाती थी, ऐसा माना जाता है कि कई बार इसके लिये विधवा को मजबूर किया जाता था। 1829 में अंग्रजों ने इसे समाप्त कर दिया। आजादी के बाद से सती होने के लगभग चालीस मामले प्रकाश में आये है। 1987 में राजस्थान की रुपकंवर का मामला सती प्रथा अधिनियम का कारण बना।

जौहर : जौहर का मतलब सभी हारे हुए (योध्दायों) की पत्नियों और बेटियों के शत्रु द्वारा बंदी बनाये जाने और इसके बाद उत्पीडन से बचने के लिये स्वैच्छिक रुप से अपनी आहुति देने की प्रथा है। अपने सम्मान के लिए मर–मिटने वाले पराजित राजपूत शासकों की पत्नियों द्वारा इस प्रथा का पालन किया जाता था। यह कुप्रथा केवल भारतीय राजपूतों शासक वर्ग तक सीमित थी प्रारंभ में और राजपूतों ने या शायद एक–आध किसी दूसरी जाति की स्त्री ने सति (पति/पिता की मृत्यू होने पर उसकी चिता में जीवित जल जाना) जिसे उस समय के समाज का एक वर्ग पुनीत धार्मिक कार्य मानने लगा था। जाटों की स्त्रीयां युध्द क्षत्र में पति के कन्धे से कन्धा मिला दुश्मनों के दान्त खटट्े करते हुए शहीद हो जाती थी। मराठा महिलाएँ भी अपने योध्दा पति की युधभूमि में पूरा साथ देती रही है।

परदा : परदा वह प्रथा है जिसमें कुछ समुदायों में महिलाओं को अपने तन को इस प्रकार से ढंकना जरुरी होता है कि उनकी त्वचा और रुप – रंग का किसी को अंदाजा ना लगे। यह महिलाओं के क्रियाकलापों को सीमित कर देता है, यह आजादी से मिलने – जुलने के उनके अधिकार को सीमित करता है और यह महिलाओं की अधीनता का एक प्रतीक है। आम धारणा के विपरीत यह ना तो हिंदुओं और ना ही मुसलमानों के धार्मिक उपदेशों को प्रतिबिंबित करता है, हालांकि दोंनों संप्रदायों के धार्मिक नेताओं की लापरवाही और पूर्वाग्रहों के कारण गलतफहमी पैदा हुई है।

देवदासी : देवदासी दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में एक धार्मिक प्रथा है जिसमें देवता या मंदिर के साथ महिलाओं की 'शादी' कर दी जाती है। यह परंपरा दसवीं सदी ए.डी. तक अच्छर तरह अपनी पैर जमा चुकी थी। बाद की अवधि में देवदासियों का अवैध यौन उत्पीडन भारत के कुछ हिस्सों में एक रिवाज बन गया।

अंग्रेजी शासन : यूरोपीयन विद्वानों ने 19वीं सदी में यह महसूस किया था कि हिंदू महिलाएं 'स्वाभाविक रुप सें मासूम' और अन्य महिलाओं से 'अधिक सच्चरित्र' होती है। अंग्रेजी शासन के दौरान राम मोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले आदि जैसे कई सुधारकों ने महिलाओं के उत्थान के लिये लडाइयॉ लडीं, हालांकि इस सूची से यह पता चलता है कि राज युग में अंग्रजों का कोई भी सकारात्मक योगदान नहीं था, यह पूरी तरह से सही नहीं है क्योंकि मिशनरियों की पत्नियॉ जैसे कि मार्था मौल्ट नी मीड और उनकी बेटी एलिजा काल्डवेल नी मौल्ट को दक्षिण भारत में लडकियों की शिक्षा और प्रशिक्षण के लिये आज भी याद किया जाता है – यह एक ऐसा प्रयास था जिसकी शुरुआत में स्थानीय स्तर पर रुकावटों का सामना करना पडा क्योंकि इसे परंपरा के रुप में अपनाया गया

था। 1829 में गवर्नर – जनरल विलियम केंवेंडिश – बेंटिंक के तहत राजा राम मोहन राय के प्रयास सती प्रथा के उन्मूलन का कारण बनें।

कर्नाटक में कित्तूर रियासत की रानी, कित्तूर चेन्नम्मा ने समाप्ति के सिध्दांत की प्रतिक्रिया में अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व किया। तटीय कर्नाटक की महारानी अब्बक्का रानी ने 16वीं सदी में हमलावर यूरोपीय सेनाओं, उल्लेखनीय रुप से पुर्तगाली सेना के खिलाफ सुरक्षा का नेतृत्व किया। झॉसी की मरानी रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रजों के खिलाफ 1857 के भारतीय विद्रोह का झंडा बुलंद किया। आज उन्हे सर्वत्र एक राष्ट्रीय नायिका के रुप में मानान जाता है। अवध की सह – शासिका बेगम हजरत महल एक अन्य शासिका थी जिसने 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किया था। उन्होने अंग्रेजो के साथ सौदेबाजी से इनकार कर दिया और बाद में उन्होने परदा प्रथा को नही अपनाया और मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण भी लिया।

भारत की आजादी के संघर्ष में महिलाओं ने एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। भिकाजी कामा, डॉ. एनी बेसेंट, प्रीतिलता वाडेकर, विजयलक्ष्मी पंडित, राजकुमारी अमृत कौर, अरुना आसफ अली, सुचेता कृपलानी और कस्तूरबा गॉधी कुछ प्रसिध्द स्वतंत्रता सेनानियों में शामिल है। शिक्षा का ज्ञान देने में मुख्य भूमिका तथा कार्य करनेवाली सावित्रिबाई फुले इन्होने जो कार्य किये वह महत्वपूर्ण है।अन्य उल्लेखनीय नाम है जिसमै मुथुलक्ष्मी रेडडी, दुर्गाबाई देशमुख आदि। सुभाष चंद्र बोस की इंडियन नेशनल आर्मी की झॉसी की रानी रेजीमेंट कैप्टन लक्ष्मी सहगल सहित पूरी तरह से महिलाओं की सेना थी। एक कवियित्री और स्वतंत्रता सेनानी सरोजिनी नायडू भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष बनने वाली पहली भारतीय महिला और भारत के किसी राज्य की पहली महिला राज्यपाल थी।

अंततः प्राचिन काल हो या मध्ययुगीन काल इसमें महिलाओं पर हुए अत्याचार और उनसे टकराते हुए अपनी स्वतंत्रता तथा भारत के आजादी के लिए महिलाओं का योगदान समाज में महत्वपूर्ण है।

संदर्भग्रंथ :

1. India's Struggle for Independence, Bipan Chandra
2. India's Ancient Past, R. S. Sharma
3. A Brief History Of Modern India, Rajiv Ahir
4. A History of Medieval India, Chandra Satish
5. Concise History of Modern India for Civil Services Examination, Sujata Menon
6. A New Look at Modern Indian History: Form 1707 To The Modern Times, B. L. Grover, Alka Mehta